



14 मई 2013 को सुबह पुणे से 7.45 पर जेट एयरवेज़ से निकले और ठीक 9.45 पर दिल्ली पहुँच गये। वहाँ से देहरादून का हवाईजहाज 10.30 बजे था। इतनी जल्दी एक जहाज से उतर कर दूसरा कैसे पकड़ेंगे इसका थोड़ा तनाव था। लेकिन जेट के ग्राउंड स्टाफ ने हमें और हमारे सामान को बड़ी सरलता से देहरादून के विमान में पहुँचा दिया।

पूना से दिल्ली और दिल्ली से देहरादून का हवाई सफर बड़े आराम से कटा। 11.25 बजे देहरादून पहुँच भी गये। सिर्फ पौने चार घंटों में पुणे से देहरादून। अविश्वसनीय अब इस दुनियाँ में कुछ रहा है क्या ? धन्य है राइट बंधु! उन्हीं की कृपा है।

देहरादून में हमें लेने के लिये उखीमठ में हम जिस लॉज में रुकने वाले थे, उसके मालिक तिवारी जी ने गाड़ी भेजी थी।

ठीक 1 बजे तक ऋषिकेश पहुँच गये थे। उखीमठ पहुँचने में रात ना हो जाए इसलिये राह में सिर्फ एक बार, खाना खाने के लिये रुकना तय हुआ था। ऋषिकेश से आगे देवप्रयाग में भागीरथी और अलकनंदा का संगम सिर्फ चलती गाड़ी से ही देखा। रास्तों पर भीड़ बहुत थी। ट्रैफिक जैम में फँसने का खतरा हर जगह दिखाई दे रहा था। बीच में कहीं एक छोटे से ढाबे पर खाना खाया।

यह पूरा पंचकेदार का क्षेत्र कहलाता है। ऋषिकेश से श्रीनगर गढ़वाल होते हुए अलकनंदा के किनारे-किनारे का सफर है। रुद्रप्रयाग पहुँचने पर यदि उखीमठ का रास्ता लेना है, तो अलकनंदा को छोड़कर मंदाकिनी घाटी में प्रवेश करना होता है। यहां से मार्ग संकरा है। इसलिए चालक को गाड़ी चलाते हुए बहुत सावधानी बरतनी होती है। मार्ग अत्यंत लुभावना और सुंदर है।

श्रीनगर होते हुए शाम 5.30 बजे तक रुद्रप्रयाग पहुँच गये। पुणे से निकले तो खासी गर्मी थी। देहरादून भी अच्छा खासा गर्म था। हमारी गाड़ी, बलेरो एसी ना होने का अफसोस भी मना चुके थे। लेकिन रुद्रप्रयाग के बाद ठंड लगना शुरू हो गई।

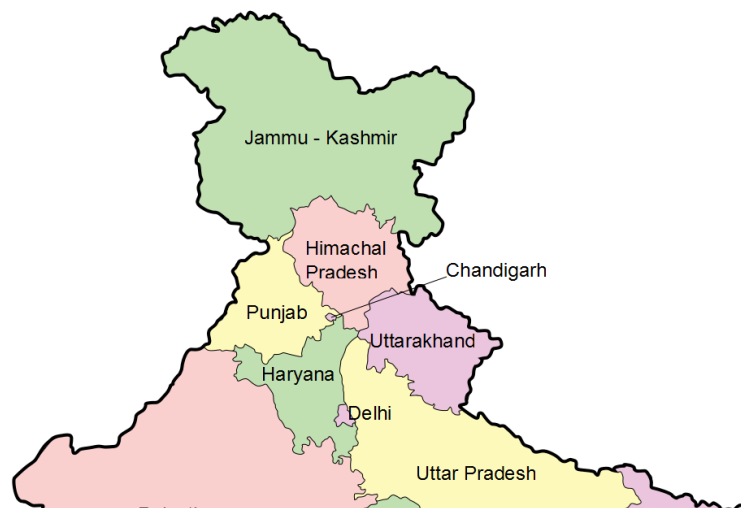
राह में अगस्ति मुनि नामक कस्बा पार किया जहां से हिमालय की नंदाखाट चोटी के दर्शन होने लगते हैं। सफर की शुरुवात में, जब भी पहली बार बर्फाच्छादित हिमालय के दर्शन होते हैं, एक रोमांच का अनुभव होता है। रुक कर उस दृश्य को सराहे बिना आप आगे बढ़ ही नहीं सकते।

मुझे कहानियों और मिथकों में विशेष रस होने की वजह से उत्सुका थी कि अगस्ति मुनि यह नाम इस जगह को क्यों मिला। लेकिन कुछ पता नहीं चला।

कहीं भी जाऊँ, मुझे इस बात की बड़ी उत्सुका होती है कि उस जगह का जो नाम है वही क्यों है। हर बार कोई ना कोई दिलचस्प कहानी निकल ही आती है। यहाँ तक की लोग अपने मकानों को जो नाम देते हैं उन नामों का भी कोई किस्सा अवश्य होता है।



उत्तराखंड भारत के उत्तर में स्थित है इस कारण इसका नाम उत्तराखंड है। कोई कहानी नहीं।
यदि जम्मू-कश्मीर को भारत का सिर माना जाए और हिमाचल प्रदेश को गर्दन तो उत्तराखंड को भारत का बायां और पंजाब को दायां कंधा कहा जा सकता है।



उत्तराखंड दो भागों में बँटा है।

कुमाँ और गढ़वाल। पहले यह उत्तरप्रदेश का ही एक हिस्सा था। सन् २००० में यह भारत का सत्ताईसवां राज्य बना। इसके पूर्व में नेपाल है और उत्तर में चीन।

शाम को 7 बजे उखीमठ पहुँच गये। उखीमठ गढ़वाल के रुद्र प्रयाग जिले में है। केदारनाथ के पास स्थित एक छोटा सा कस्बा है यह। लेकिन उत्तरांचल के हिसाब से ये काफी बड़ी जगह है। इसकी समुद्रतल से ऊँचाई 4300 फुट है।

बद्रीनाथ, केदारनाथ के कपाट खुलने के कारण उखीमठ के अनुश्री लॉज में आने जाने वाले यात्रियों का तांता लगा था। हमारे पहुँचने से कुछ देर पहले ही जोर का तूफान आया था। लॉज के बारामदे में इतनी धूल थी मानों सालों से झाड़ू ही ना लगी हो। लॉज के मालिक तिवारीजी सहित वहाँ काम करने वाला हर व्यक्ति व्यस्त था। लेकिन जब यह पता चला कि हम लोगों को पक्षियों में रुचि है, तिवारीजी ने खुद ही उत्तराखंड के पक्षियों पर श्री भगत सिंग ने लिखी तीन बेहद सुंदर किताबें ला कर दीं।



15 मई की सुबह सुबह छः बजे हमारे उत्तराखंड के गाइड धन सिंग नेपाली उर्फ धर्मा और उनके साथ एक गाड़ी और ड्राइवर जिनका नाम हर्षमणि उर्फ मणि था हाजिर हो गये। लॉज से बाहर निकलते ही पक्षीदर्शन की शुरुवात हो गई।

रास्ते में रुक कर फोटो खींच रहे थे कि अचानक मणि को चुकार की आवाज सुनाई दी। यह पक्षी बड़ी मुश्किल से दिखाई देता है। नीचे ढलान पर कहीं मियाँ बीबी घूमते नजर भी आ गये। लेकिन बार बार झाड़ियों में घुस जाते। बड़े कष्टों से उनके फोटो खींचे गये। देर हो रही थी इसलिये धर्मा और मणि ने आश्वासन दिया कि बाद में अवश्य मिलेंगे तब अच्छे फोटो खींच लेना। बाद में आवाज तो कई बार सुनी, लेकिन दिखाई एक बार भी नहीं दिये।

सारी नामक गाँव में जा कर मणि ने गाड़ी रोकी। चाय पी कर 8.30 बजे देवरिया ताल के लिये पैदल चढ़ना शुरू किया। हालांकि मैंने सफर की तैयारी के लिये महीना भर पहले जिम जाना शुरू किया था, फिर भी ठंड काफी थी और बड़ी जल्दी साँस भी फूलने लगी।

करीब तीन साढ़े तीन किलोमीटर की ७० डिग्री की खड़ी चढ़ाई थी। रास्ते में बहुत से पक्षी दिखे।

ऊपर पहुँच कर हर एक को १५० रुपये का टिकिट खरीदना पड़ता है। यह पैसे वन संरक्षण के लिये इस्तेमाल होते हैं।

पहाड़ी चढ़ते समय कहीं तालाब का नामोनिशान भी नहीं दिखता और अचानक ही किसी चमत्कार की तरह आपके सामने यह तालाब प्रकट हो जाता है।

देवरिया ताल के दर्शन होते ही सारी थकान गायब हो गई। करीब ७९०० फीट की ऊँचाई पर स्थित यह ताल सचमुच कथा कहानियों के मायावी सरोवर की तरह ही लगता है। कहा जाता है कि पुराणों में जिस 'इन्द्र सरोवर' का उल्लेख है, जिसमें देवता जल क्रीड़ा किया करते थे, यह वही है।



ताल बहुत बड़ा भी नहीं है और बहुत छोटा भी नहीं है। इस सरोवर का कुल व्यास पांच सौ मीटर है। इसके चारों ओर बांस व बुरांश के सघन वन हैं तो दूसरी ओर एक खुला सा मैदान है।



ताल की पृष्ठभूमि पर बर्फ से ढंका चौखंबा पर्वत उसकी रहस्यमयता को और बढ़ा रहा था। हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियों से घिरा यह तालाब इतना अद्भुत दिखता है कि उसका वर्णन शब्दों में कर पाना असंभव है।

माना जाता है कि यही ताल महाभारत की यक्षप्रश्न वाली कहानी का प्रमुख पात्र, वह मायावी सरोवर है, जहाँ यक्ष की अनुमति के बिना पानी पीने की वजह से बाकी सारे पांडव अचेत हो गये थे। फिर युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्नों का सही उत्तर दे कर अपने परिवार को पुनर्जिवित किया।

ताल का वातावरण इतना ठंडा, शांत और गूढ़ लगता है कि सचमुच विश्वास होने लगता है कि यहाँ कुछ तो रहस्यमय अवश्य है। लगता है कि जरा ध्यान से देखें तो ना जाने कब किसी बुरांश के पेड़ पर बैठा यक्ष नजर आ जाए।



मणि और धर्मा ने कहानियों में और कहनियाँ जोड़ दी। कहने लगे कि तालाब बहुत गहरा है। कई बार कोशिश करने पर भी उसकी गहराई आज तक नहीं नापी जा सकी है।

कहते हैं तालाब में बहुत सारे बहुत ही बड़े बड़े बर्तन डूबे हैं, जो पांडव कालीन हैं। बहुत समय पहले, हर साल पांडव लीला के समय सारा गाँव यहीं देवरिया ताल के किनारे इकट्ठा होता। तब वे बर्तन निकाल कर उनमें खाना बनाया जाता। उत्सव खत्म होने पर बर्तन साफ कर के फिर से ताल में डाल दिये जाते। एक बार किसी ने गलती से या शैतानी से झूठा बर्तन ताल में डाल दिया। जिससे देवता रुष्ट हो गये और सारे बर्तन गायब हो गये।

सारे उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में पांडवों के निशान जगह जगह मिलते हैं।

जगह जगह उनकी कहानियाँ और मिथक फैले हुए हैं।



ठंड शुरू होने पर यहाँ आमतौर पर हर गाँव में पांडव लीला होती है। रामलीला भी अभी तक यहाँ जीवित है। मणि का कहना था कि ठंड में सब दूर बर्फ होती है। कहीं आ जा नहीं सकते, तो समय काटने के लिये कुछ ना कुछ तो करना जरूरी है ना।

इन लीलाओं की सबसे मजेदार बात यह है कि प्रत्येक किरदार पुश्तैनी होता है। यानि कई पीढ़ियों से जिस परिवार का भीम है ,उसी परिवार के लोग ही पीढ़ियों भीम ही बनते रहेंगे। दुसरा कोई नहीं बन सकता।

इस व्यवस्था की वजह से कई बार मजेदार हादसे भी हो जाते हैं। महिला किरदार भी पुरुषों द्वारा ही निभाए जाते हैं । कई बार कोई नाजुक सा दुर्योधन और एकदम पहलवान द्रौपदी भी बन जाते हैं



ताल के चारों ओर चलने के लिए सीमेंट का पथ है।

सुबह जब हम लोग पहुँचे तो घाँस पर ओस का गीलापन था। चारों ओर पंछियों की हलचल थी। रेड बिल्ड ब्लू मॅगपाय तो बेहद निर्भयता से बिल्कुल हमारे आसपास घाँस में चुगते नजर आ रहे थे।

ताल के किनारे ही नाग देवता का मंदिर है।



ताल का पानी बिल्कुल अचल और स्थिर है। दूर से हरा दिखने वाला पानी पास जाने पर इतना साफ दिखता है कि छोटी छोटी मछलियाँ भी साफ नजर आती हैं।



आसपास के बुगियाल का चक्कर लगा कर हम खाना खाने वहाँ स्थित झोपड़ी में गये। खाने में दाल चावल और कोई स्थानिक हरा साग था। पूछने पर हॉटेल वाला बोला, ये लोकल भिंडी है। इतने से खाने के उसने प्रति व्यक्ति २०० रुपये लिये। उसका कहना था कि उसे हर चीज नीचे से मंगवानी पड़ती है। खाना खा कर ताल के किनारे पेड़ के नीचे आराम से बैठ गये। धनंजय ने बताया कि कुछ देर पहले ही उसे एक लोमड़ी दिखाई दी थी।

कुछ ही देर में वो लोमड़ी फिर तालाब के आसपास घूमती नजर आई। रैंम्प पर चलती किसी मॉडल की तरह उसके फोटो खींचे गये।

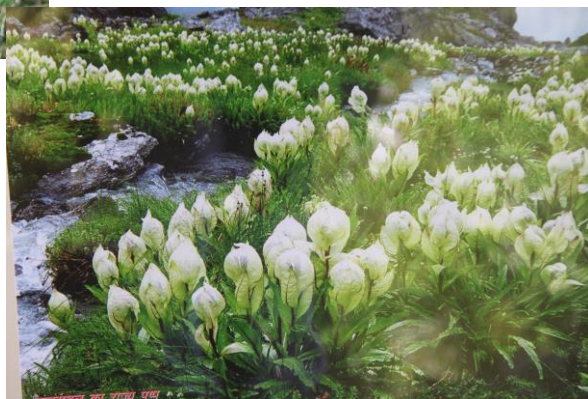


दोपहर वहाँ बिता कर पौने तीन बजे वापस उतरना शुरू किया। पक्षी देखते और फोटो खींचते साढ़े चार तक सारी गाँव पहुँच गये।



वन विभाग की वहाँ एक छोटी सी फोटो गैलरी है। हालांकि यह सारा भाग केदारनाथ कस्तूरी मृग विहार के अंतर्गत आता है, यहाँ वे हिरन दिखने की नाममात्र भी संभावना नहीं थी।

तो हमने कस्तूरी मृग और ब्रह्म कमल के फोटो के ही फोटो खींच लिये।



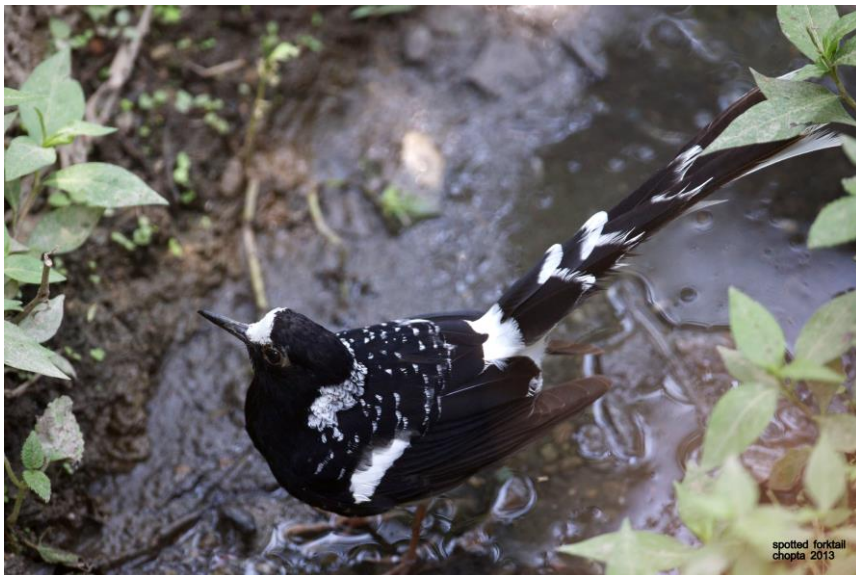
तुतरियाल देखने की इच्छा प्रकट कर चुके थे ,सो मणि उसे ढूँढने की पूरी कोशिश में लगा था।



हर ढलान पर मणि गाड़ी रोक कर तुतरियाल की खोज करता। उखीमठ वापस पहुँचने तक तुतरियाल तो नहीं दिखा ,लेकिन पक्षीयों की फेहरिस्त काफी लम्बी हो गई थी।

दिन भर में हमने उखीमठ से देवरिया ताल के मस्तूरा , सारी गाँव वाले रास्ते पर और देवरिया ताल के आस पास 22 प्रजाति के पक्षी देखे।

रास्ते के किनारे बहते छोटे छोटे झरनों के आसपास फोर्क टेल घूमते नजर आ ही जाते थे।



Verditer



वरडिटर फ्लायकॅचर मुझे हमेशा बहुत आकर्षित करता रहा है। फिरोजी रंग का पक्षी हो सकता है ऐसा इसे देखने से पहले मुझे कभी लगा नहीं था।

इसका मराठी नाम नीलांग भी बहुत सुंदर है। यहाँ आने से पहले भी बहुत बार वरडिटर देखे थे, लेकिन नजर पड़ती और वे फट से उड़ जाते .देवरिया ताल आने के बाद से जहाँ तहाँ वरडिटर दिखाई दे रहे थे। ।

नीचे उतरते समय एक महाशय बिल्कुल सामने ही आ बैठे। उन्हें शायद कहीं जाने की जल्दी नहीं थी। मैं विडियो कैमेरा ले कर बिल्कुल पास पहुँच गई। तब भी कोई फर्क नहीं पड़ा। आस पास एक बड़ा सा कीड़ा उड़ रहा था। वरडिटर का पेट शायद भरा हुआ था इसलिये गर्दन घुमा घुमा कर देखते रहा ,पर पकड़ने की कोशिश नहीं की।



White Cheeked Bulbul



उपर चढ़ते समय मणि ने किसी झाड़ी से छोटे छोटे शहतूत जैसे फल तोड़ कर ला दिये। इन्हें गौरा फल कहते हैं। थोड़े खट्टे मजेदार स्वाद वाले फल थे। कहीं हम उसके फल खत्म ना कर दें शायद इस डर से सफेद गालों वाली हिमालयन बुलबुल ने जल्दी जल्दी खाना शुरू कर दिया।



सारी गाँव का छोटा सा मंदिर

हम जब दिन भर घूम कर वापस लौटे, तो तिवारी जी को आज क्या देखा ये जानने में बेहद रुचि थी।

हम जिस इलाके में घूम रहे थे, वहाँ मुझे कहीं भी कोई बेहद आलिशान मकान या पुराना किला, किसी महल के खंडहर जैसी कोई इमारत नहीं दिखाई दी।

उत्सुकावश तिवारी जी से पूछा कि यहाँ उत्तराखंड में कोई राजे-रजवाड़े नहीं थे क्या?

सिक्किम से लेकर लद्दाख तक, जगह कितनी भी दुर्गम क्यों ना हो, राजाओं, राजवंशों के निशान दिखते हैं।



तिवारी जी के साथ साथ हमारे गाईड धर्मा को भी हँसी आ गई। “आपको क्या लगता है, इसे गढ़वाल क्यों कहते हैं?”

यहाँ की हर छोटी-बड़ी पहाड़ी पर किसी ना किसी राजा का राज्य था। हर राजा का एक गढ़ यानि हवेली या महल था। तो चारों ओर गढ़ ही गढ़ थे, और हर गढ़ का एक अलग शासक था। फिर पँवार वंश के किसी राजा ने इन सारे राजाओं को हराया और सारे छोटे छोटे राज्यों को मिला कर एक बड़ा राज्य बनाया। उसे गढ़वाला यानि सारे गढ़ों का मालिक कहने लगे। धीरे धीरे ये सारा भाग ही गढ़वाल कहलाने लगा।

मैंने पूछा “तिवारी जी, आपकी लायब्रेरी में गढ़वाल पर भी कोई किताब है क्या?”

लेकिन उनके पास सिर्फ पक्षियों और पेड़ों के बारे में ही किताबें थीं।

किंतु शाम को अचानक तिवारीजी ने कहीं से एक किताब ला ही कर दी। ‘गढ़वाल का इतिहास’। कहने लगे “आपको यदि इतनी उत्सुका है गढ़वाल के बारे में, तो किताब पढ़ ही लीजिए।

बड़ी भारी भरकम किताब थी। एकदम MA के स्तर का इतिहास था।

हालांकि समय बहुत कम था और रात को जनरेटर भी १० बजे बंद हो जाता था। तब भी जितना संभव था, उतना पढ़ा। बहुत सी जगहों के बारे में बड़ी रोचक जानकारी मिली।

मान्यताओं के अनुसार उखीमठ का प्रारम्भिक नाम 'उषामठ' था, जो बाद में बदलकर या बिगड़ कर 'उखीमठ' हो गया।

यहाँ की स्थानीय किंवदन्ती के अनुसार उषा-अनिरुद्ध की प्रसिद्ध पौराणिक प्रणयकथा की घटना स्थली यही है। बचपन से मेरे ऐतिहासिक और पौराणिक ज्ञान का आधार अमरचित्र कथाएँ रहीं हैं।

उषा- अनिरुद्ध का नाम सुनते ही आँखों के सामने पलंग सकट अनिरुद्ध को उठाए उड़ती चित्रलेखा का चित्र आ गया।

उषा बाणासुर की कन्या थी और अनिरुद्ध श्रीकृष्ण का पोता । उषा ने एक बार सपने में अनिरुद्ध को देखा और उसे प्यार हो गया। अब सपने में जिसे देखा वह कौन था, ये कैसे पता लगे? तो इसका पता लगाने के लिये उसने अपनी सखी चित्रलेखा को, जो मायावी विद्याओं में पारंगत थी ,अपने सपनों के राजकुमार का हुलिया बयान किया। चित्रलेखा ने उस वर्णन के आधार पर कई चित्र बना डाले। उनमें से एक अनिरुद्ध से मिलता जुलता था।

बाणासुर और कृष्ण तो एक दूसरे के दुश्मन थे। लेकिन उषा को कौन समझाए। आखिर मायावी चित्रलेखा रात को चुपचाप द्वारका पहुँची और पलंग सकट अनिरुद्ध को उठा लाई। यह चित्र अमरचित्र कथा में बहुत सुंदर है। यह दुनिया की शायद अद्वितीय प्रेमकथा होगी जिसमें हिरोइन ने हीरो का अपहरण करवा के उससे शादी की।

अनिरुद्ध बेचारा , नींद खुली तो खुद को बाणासुर के महल में पाया। जब उसे उषा ने अपने सपने और प्रेम के बारे में बताया तो उसे भी उषा से प्रेम हो गया। चित्रलेखा ने उनका गंधर्व विवाह भी करवा दिया। विवाह के बाद चार महीने वे यहीं उखीमठ में रहे।(यह जानकारी अमरचित्र कथा में नहीं थी)। उधर घर पर लोग अनिरुद्ध को ढूँढ रहे थे। फिर कृष्ण-बलराम का बाणासुर से युद्ध हुआ। आखिर में सब मान गये। और यहीं उखीमठ में उनका बकायदा विवाह करवाया गया।

यहाँ एक मंदिर में अनिरुद्ध और उषा की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित हैं। हालांकि यह मंदिर देखने का विचार हमारे मन में भी नहीं आया, लेकिन वहाँ अब भी वह विवाह वेदी और मंडप विद्यमान है जहाँ इनके फेरे हुए।

वाह! क्या कहानी है ! हमारी पौराणिक कथाओं में एक से बढ़ कर एक प्रेमकथाएँ और princess stories उपलब्ध हैं। अनिरुद्ध, उदयन, मालविकाग्निमित्र आदि कहानियाँ अमरचित्रकथाओं और उनके बेहद खूबसूरत चित्रों की वजह से मानों दिल पर छप गई हैं।



उखीमठ उत्तराखंड का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भगवान केदारनाथ की शीत कालीन राजधानी है।

सर्दियों में जब हिमालय बर्फ से ढँक जाता है, तो केदारनाथ के कपाट बंद कर दिया जाते हैं। तब भगवान शिव की मूर्ती को नीचे उखीमठ में लाया जाता है। यहाँ के मंदिर में छः महीने केदारनाथ के ज्यतिर्लिंग की पूजा होती है। वैसे तो यहाँ के मंदिर में शिव की पूजा वर्ष भर ओंकारेश्वर के रूप में होती है। यहाँ पंच केदार के रूप में पाँच सर वाले शिव की मूर्ती स्थापित है।

उखीमठ से आते जाते रास्ते के एक ओर नीचे घाटी में बहती मंदाकिनी नदी दिखती ही रहती है। कुछ निचले भाग में नदी के किनारे एक बहुत से मंदिरों वाला शहर गुप्त काशी भी दिखता है।





सारा पहाड़ कंघी किया हुआ सा लगता है। जंगलों की जगह खेतों ने ले ली है ।
 वहाँ से निकलते समय हर बार धर्मा या मणि याद से बताते कि ये गुप्त काशी है जहाँ
 शिवजी लुप्त हुए थे।
 भगवान शिव को शायद भीड़ भाड़ और लोगों से नफरत थी, तभी तो उन्होंने नदी
 पहाड़ों ,हिमशिखरों जैसे दुर्गम स्थानों को अपना निवास स्थान बनाया। लेकिन इतने
 से हार मान जाएँ तो वो भक्त ही क्या?
 जहाँ कहीं शिव के होने की संभावना है वहाँ युगों से आज तक भीड़ लगी है।
 कुरुक्षेत्र में महाभारत के युद्ध के बाद पांडव अपने गोत्र हत्या और ब्रह्म हत्या के पाप
 से दबे जा रहे थे। तब भगवान कृष्ण ने उन्हें हिमालय जा कर शिव से क्षमा याचना

करने को कहा। कुरूक्षेत्र के नरसंहार के कारण शिव पांडवों से नराज थे। वे लोग उन्हें खोजते हुए हिमालय तक आ पहुंचे। भगवान शंकर पांडवों को दर्शन नहीं देना चाहते थे, इसलिए वे वहां से अंतर्ध्यान हो कर केदार में जा बसे।

पांडवों को आता देख वे यहाँ से गायब हो गये। इसलिये इस स्थान का नाम गुप्त काशी है।

दूसरी ओर, पांडव भी लगन के पक्के थे, वे उनका पीछा करते-करते केदार पहुंच ही गए। भगवान शंकर ने तब तक बैल का रूप धारण कर लिया और वे अन्य पशुओं में जा मिले। पांडवों को संदेह हो गया था। अतः भीम ने अपना विशाल रूप धारण कर दो पहाड़ों पर पैर फैला दिये।

अन्य सब गाय-बैल तो निकल गए, पर शंकर जी रूपी बैल पैर के नीचे से जाने को तैयार नहीं हुए। भीम बलपूर्वक इस बैल पर झपटे, लेकिन बैल भूमि में अंतर्ध्यान होने लगा। तब भीम ने बैल की त्रिकोणात्मक पीठ का भाग पकड़ लिया। भगवान शंकर पांडवों की भक्ति, दृढ़ संकल्प देख कर प्रसन्न हो गए। उन्होंने तत्काल दर्शन देकर पांडवों को पाप मुक्त कर दिया।

उसी समय से भगवान शंकर बैल की पीठ की आकृति-पिंड के रूप में श्री केदारनाथ में पूजे जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जब भगवान शंकर बैल के रूप में अंतर्ध्यान हुए, तो उनके धड़ से ऊपर का भाग काठमाण्डू में प्रकट हुआ। अब वहां पशुपतिनाथ का मंदिर है। शिव की भुजाएं तुंगनाथ में, मुख रुद्रनाथ में, नाभि मदमहेश्वर में और जटा कल्पेश्वर में प्रकट हुए। इसलिए इन चार स्थानों सहित केदारनाथ को पंचकेदार कहा जाता है। यहां शिवजी के सुंदर मंदिर बने हुए हैं।

इन्हीं पंचकेदार में से एक तुंगनाथ और मध्यमहेश्वर के आधे रास्ते तक यानि बंतौली गाँव तक हम दो दिन बाद जाने वाले थे।

दूसरे दिन सुबह सुबह हम बनिया कुंड जाने वाले थे। इस जगह की धर्मा ने विशेष सिफारिश की थी। तय हुआ था कि रात हम बनिया कुंड में बिता कर दूसरे दिन वहीं से तुंगनाथ जाएँगे और फिर रात को वापस उखीमठ वापस आ जाएँगे।

एक दिन के लिए सारा सामान ले जाने का कोई मतलब नहीं था ,तो सिर्फ एक दिन के लिये आवश्यक सामान छोटे बॅग्स में भर के बाकी सामान हमने वहीं तिवारी जी के पास रख दिया।





सुबह पौने पाँच बजे भी चाय कॉफी देने में तिवारी जी को कोई ऐतराज नहीं था। उनके यहाँ आने वाले बहुतांश लोग चारधाम यात्री होते हैं। रात गुजार कर सुबह की पहली किरण के साथ ही अगले सफर को चल देते हैं। इसलिये अनुश्री लॉज में भी सब कर्मचारियों को चार बजे उठने

की आदत है।

सुबह जल्दी ही हम बनिया कुंड पहुँच गये। रास्ता बहुत ही सुंदर था। रास्ते भर फोटो खींचने के लिये हम रुकते रहे।

राह में पातालपानी नामक एक जगह है, जहाँ एक सुंदर झरना है। झरने के पास वाले पुल पर कुछ देर रुके। अचानक मणि बोला “जंगली मुर्गा और मुर्गी हैं। देखा तो खलीज फेजेंट थे। इन्हें देखने के लिये पनगोट में हम सुबह चार बजे से उठ कर घूमे थे। आसाम में भी बड़ी मुश्किल से दिखाई दिये थे। यहाँ साधारण मुर्गे की तरह चुगते घूम रहे थे।



कुछ आगे जाने पर बीच रास्ते में सफेद बिब लगाए लाफिंग थ्रश रोड़ पर ही खेल रहे थे। यहाँ पक्षी बहुत निडर हैं।



बनिया कुंड चोपटा और दुगलबिहड़ा के बीच छोटी सी जगह है। रास्ते के एक तरफ छोटे छोटे एक-दो कमरे के हॉटल है। ऐसे ही एक हॉटल में धर्मा ने हमारी व्यवस्था की थी। दिन भर हम पैदल ही घूमने वाले थे, अतः गाड़ी की आवश्यकता नहीं थी। मणि हमें छोड़ कर वापस चला गया। सामान कमरे में डाल कर आलू परांठे का नाश्ता कर हम घूमने चल पड़े। सागर ने यहाँ खुशी खुशी मँगी खाई।



सारे उत्तराखंड में कहीं भी जाइए , रास्ते पर हॉटल या घर है, पिछवाड़े वादी और सामने पहाड़। बनिया कुंड भी अपवाद नहीं है। यहाँ भी हमने रास्ते के दूसरी तरफ से पहाड़ चढ़ना शुरू किया।



बेहद खूबसूरत अल्पाइन जंगल था। चढ़ते समय साँस फूल रही थी। कल की देवरिया ताल की चढ़ाई का परिणाम पैरों में महसूस हो रहा था।

अचानक ना जाने कहाँ से पंद्रह-बीस बूढ़े हिमाचली सपासप चढ़ते प्रकट हुए। सिर पर खास हिमाचली टोपियाँ, हाथों में डंडा, पीठ पर सँक। उस समूह की औसत उम्र ६५ के आस पास होगी। देखते देखते वे अदृश्य हो गये। मणि ने बताया कि ये हिमाचली सालों से हर साल चार धाम यात्रा करते हैं। इनकी यात्रा औरों से अलग होती है। ये पहाड़ों पर शॉर्टकट से चढ़ कर पैदल ही सारे धाम करते हैं। लगभग महिने भर में वे ये यात्रा पूरी करते हैं। उस समूह का सबसे बूढ़ा सदस्य ७० साल से उपर ही होगा, पर वह भी मुझ से २० गुना अधिक तेज चढ़ रहा था।



जंगल में पक्षियों की संख्या बहुत थी। वुडपेकर तो हर जगह दिखाई दे रहे थे। रूफस बेलीड को देख कर तो दिल खुश हो गया। इतना चमकदार नारंगी रंग था मानो सर पर किसी पेंटर ने ब्रश पोंछ दिया हो।



ठंड बहुत थी। कुछ देर बाद अचानक सामने का दृश्य बदल गया। चारों तरफ पहाड़ों से घिरा हुआ सामने घाँस का सुंदर मैदान था। कई रंगों के छोटे छोटे मौसमी फूल खिले हुए थे। यहाँ इस तरह के मैदानों को बुग्याल कहते हैं। मुझे यह नाम भी बेहद पसंद आया। अब आज से लॉन की जगह बुग्याल शब्द का ही प्रयोग करूँगी ,मैंने तय किया।



यह जगह इतनी खूबसूरत थी, इतनी खूबसूरत थी कि उसका वर्णन शब्दों में कर पाना असंभव है। मेरे परिचित प्रत्येक व्यक्ति को यहाँ आना ही चाहिए ऐसा मुझे लगने लगा। वहीं मोबाइल पर फोटो खींच कर हमने Whats app पर दोस्तों और रिश्तेदारों को भेजना शुरू कर दिया।

बुग्याल में दो पत्थर की झोपड़ियाँ थीं। धर्मा हमसे बहुत पहले पहुँच कर वहाँ एक चट्टान पर धूप सेंकती दो बूढ़ी अम्माओं से बतिया रहा था। पास ही कुछ भैंसें चर रही थीं।

हाफ हुफ करते उनके पास पहुँची तो वे दोनों खुश हो गईं।



धर्मा धनंजय के साथ आगे बढ़ गया और हम वहीं बैठ गये। उन दोनों ने गढ़वाली में तमाम सवाल पूछना शुरू किया। मैंने भी हिंदी में सवाल जवाब शुरू किये।

वैसे भी मणि का कहना है कि गढ़वाली हिंदी का अपभ्रंश ही है। तो दोनों पार्टियों को इस वार्तालाप में ५० प्रतिशत लाभ होने लगा।

झुर्रियों से भरा चहरा, उम्र 65-70 के आसपास। लेकिन दोनों बुढ़िया दिखने में पहाड़ी सौंदर्य की जीती जागती मिसाल थी।

हमारे बारे में जितनी उत्सुका उन्हें थी, उससे कहीं अधिक ही उनकी एक भैंस को भी थी। बड़े मज़ेदार तरीके से वह भैंस पास आ कर किसी कुत्ते की तरह सूँघने और देखने लगी। मुझे कुत्तों से डर नहीं लगता लेकिन भैंसों की आँखें मुझे बड़ी डरावनी लगती हैं। पर उनमें से छोटी वाली अम्मा की वह भैंस विशेष लाइली थी। उसने बाकायदा हमारा परिचय करवाया। इस भैंस के शरीर पर किसी झबरीले कुत्ते की तरह बाल थे। पता चला बचपन में भैंसों के बाल होते हैं जो बड़े होने पर झड़ जाते हैं।



इन अम्माओं का दोनों का आपस में कोई रिश्ता नहीं था और वे अलग अलग झोपड़ों में रहती थीं।

यह जान कर मुझे आश्चर्य का धक्का लगा कि उस बुग्याल में बस वे दोनों अकेली ही पिछले अठारह बीस सालों से रह रही थीं।

सबसे निकटतम गाँव बनियाकुंड है जहाँ से यहाँ तक पहुँचने में हमें करीब एक घंटा लगा था। मैंने उनका नाम पूछा तो वे हँसने लगीं। एक बोली नाम है ही नहीं। दूसरी बोली याद नहीं।

बीमार होने पर क्या करती हो ?

“जड़ी-बूटियाँ बहुत हैं हिमालय पर। धूप आती है तो धूप में बैठ जाते हैं।” उनके पति भी पहले यहीं रहते थे। मर गये। कितने साल हुए? मालूम नहीं। एक के तीन बेटे थे, जो पास के किसी गाँव में रहते थे। उनमें से कभी कभी कोई आ जाए तो कुछ ज़रूरी सामान और सबसे ज़रूरी चीज़ बीड़ी ला देता है।



हम कहाँ से आए हैं ये जानने में उन्हें रुचि थी। उनमें से एक को मुंबई के बारे में भी मालूम था। उसका बेटा एक बार गया था वहाँ।

हमारी भाषा में भी गऊ को गऊ और गऊशाला को गौशाला कहते हैं ये जान उन्हें इतनी खुशी हुई कि उनमें से एक ने इस बात पर मुझे गले से लगा लिया।

राशन और खाने का क्या करती हैं ये पूछने पर उन्होंने सामने को इशारा कर दिया। झोपड़ी के आहाते में आलू बोए हुए थे।



एक के तीन बेटे हैं और दूसरी के कोई नहीं ,पर उसको इसका ना तो कोई अफसोस था ना ही ज़रूरत। बेटों वाली एक बार बीमार हुई थी तब पूरा एक महीना उखीमठ के अस्पताल में रही थी।

लेकिन तब दूसरी अम्मा ने क्या किया? “अकेली रही?”

“तो ?” मेरे आश्चर्य पर उसे आश्चर्य हुआ।

“डर नहीं लगा?”

“किसका? ये तो देवभूमि है, यहाँ भूत पिशाच कुछ नहीं आते।”

“भूत नहीं अम्मा , आदमियों का, चोर, डाकुओं का”

“यहाँ अगले पिछले बारा गावों के लोग सब एक दूसरे को जानते हैं, चोर चोरी कर के पहाड़ों पर जाएगा भी तो कहाँ? हाँ बाघ भालू, भेड़िये आते हैं भेड़ , बकरियाँ उठाने, तो उसके लिये ये है।”

उसने जिस फुर्ति से कमर में लगी धारदार दराँती निकाली , देख कर मैं दंग रह गई।



एक हाथ में दराँती दुसरे में डंडा ले कर खड़ी , दातों की खिड़कियों से मुस्कराती अम्मा किसी सिकंदर से कम नहीं लग रही थी। उसे देख कर एक बार भी शक नहीं हुआ कि वह डींग मार रही है। इस बुग्याल में अकेले रहना सचमुच हँसी खेल नहीं है। और नीचे बनिया कुंड में तक कुत्तों के गले में काँटेदार टीन के पट्टे थे , ताकि उन्हें तैदुए ना उठा सकें



|

दोनों ने बहुत प्यार किया। छू कर देखा, चुम्में लिये। जब हमने उनके साथ फोटो खींचना चाहा, तो वे थोड़ी सकुचा गईं। बोली हमारे कपड़े अच्छे नहीं हैं। गोबर उठाने से गंदे हो गये हैं। फिर सर का स्कार्फ ठीक कर ,अच्छी लग रही हूँ ना यह भी पूछ लिया। मुझे यह देख कर बहुत मज़ा आया कि औरत, चाहे वो उत्तराखंड के बनिया कुंड नामक छोटे से गाँव के पहाड़ पर अकेली रहने वाली बूढ़ी ही क्यों ना हो , अपने दिखने के प्रति जागरूक और सचेत रहती है।



चॉकलेट खा कर बहुत खुश हो गईं। उन्होंने भी जेब से बीड़ी निकाल कर पेश की। और ऊपर चढ़ने की मेरी इच्छा नहीं थी। इसलिये वहीं एक पेड़ के नीचे डेरा डाला। मौसम बहुत ही बढ़िया था, लेकिन पेड़ की छाँव में ठंड लगती और बाहर धूप।

वहाँ बैठ कर बाकियों का इंतजार करते इस बात का एहसास हुआ कि ये अम्मा लोग तो बिल्कुल सिद्ध योगी हैं। सारा दिन धूप में बैठ ,कुछ ना करते बिताना बेहद कठिन है। TV किताबें तो छोड़िये, यहाँ तो बात तक करने के लिए भी तीसरा आदमी नहीं है।



नज़ारे चाहे बेहद सुंदर हों पर यदि रोज की बात हो तो कोई कब तक देखेगा। और ठंड के दिनों में तो दिन में दो घंटे भी बाहर नहीं बैठ पाती होंगी। सारा दिन सो तो कोई सकता नहीं। उनका कहना था कि आजकल भैंसें चराने भी वे नहीं जातीं। भैंसें खुद चर आती हैं।

तो इस तरह सारा दिन जागृत अवस्था में कुछ ना करते हुए सालों साल चट्टान पर बैठे कर गुजारना.....

मैंने प्रयोग की खातिर कुछ समय पेड़ के नीचे शांति से बैठ गुजारा। चारों ओर देखने के लिये शानदार नज़ारे थे। लेकिन थोड़ी ही देर में कुछ काटने लगा।

दो घंटे बाद धनंजय वापस लौटा तो उपर के बुग्याल का वर्णन करते नहीं थक रहा था। उसके अनुसार यदि यह बुग्याल स्वर्ग की तरह था, तो वह बुग्याल प्रत्यक्ष स्वर्ग ही था।



हमने प्रण किया कि जाने से पहले फिर यहाँ अवश्य आएँगे।

एक बजे तक उतर कर वापस बनिया कुंड के हॉटल में पहुँच गये। खाना बनने में देर थी इसलिये कमरे के पीछे की बालकनी में बैठ कर बर्फच्छादित पर्वत को देख रहे थे। नीचे गोल गोल कानों वाला एक बड़ा सा चूहा 'पाइका' अपनी पत्नी के साथ धमाचौकड़ी मचा रहा था।



सामने ही मिस्टर प्लंबियस रेडस्टार्ट मिस प्लंबियस रेडस्टार्ट को प्रभावित करने के लिये अपनी पूँछ का पंखा बना कर लहरा रहे थे।



वह छोटा सा रेडस्टार्ट अपनी पूँछ लहराता हुआ इतनी तेजी से चारों तरफ उड़ रहा था कि उसके पंखों की टर्रर.....आवाज हो रही थी। उसकी इस अदा को कैमरे में कैद करने की कोशिश आखिर सफल हुई।



हमारे साथ साथ मॅडम भी इम्प्रेस हुई। उन्होंने भी अपनी पूँछ फुला कर दिखाई और फिर घर बनाने के लिए तिनके चुनने लगीं।

लेकिन इन भाई साहब को कोई दूसरा काम था नहीं तो वे अपना डिस्प्ले करते रहे।

खाना बन गया था तो हम सब उठ कर भीतर आए। धनंजय अपने कैमरे समेट कर उठा ही था कि सामने के पेड़ पर एक पक्षी आ कर बैठा। कुछ अलग सा लगा इसलिये उसने सागर को आवाज लगाई। पक्षी देखते ही मारे खुशी के सागर ने नाचना शुरू कर दिया। ये ब्लैक एंड यलो ग्रासबीक था जो कब से उसकी विश लिस्ट में था।

यदि एक मिनिट पहले धनंजय वहाँ से उठा होता, तो हमें पता भी नहीं चलता वह कब आया और कब गया।
उसे जाने की कोई जल्दी नहीं थी। बड़े इत्मिनान से उसने घाँस में अपना खाना ढूँढा।
में दौड़ लगा कर वीडिओ कैमेरा ले कर आई। बिल्कुल उसके नजदीक जा कर शूट किया। लेकिन वह एक निडर पक्षी था। ज़रा नहीं डरा।



खाना खा कर कुछ ही देर में हम दुगलबिट्टा की ओर चले।

जंगल के बीच से पक्का रास्ता है। दुगलबिट्टा से तुंगनाथ बहुत दूर नजर आ रहा था। थोड़ी धूप आई तो ढलान पर रोहडोडेंड्रॉन के फूल चमकने लगे। इसे गढ़वाली में बुरांश कहते हैं।

शाम को वापस लौट कर हम सब लॉज के पीछे वाले चबूतरे पर फिर जम गये। मौसम बेहद सुंदर था। बनियाकुंड बट्रीनाथ के रास्ते पर पड़ता है इसलिये उस दिशा में जाने वाले श्रद्धालुओं के यहाँ रुक कर खाना कर आने जाने का सिलसिला निरंतर चालू था।

एक सज्जन धनंजय का कैमेरा देख कर समझे कि हम टीवी वाले हैं। हम चारधाम जा ही नहीं रहे और इतने बड़े भारी कैमेरे से सिर्फ पक्षी और पेड़ पौधों के फोटो खींचते हैं यह सुन कर वे बेहद विक्षुब्ध हो गये।

उन्होंने मुझे पकड़ कर भारतीय संस्कृति पर एक भाषण दिया और समझाया कि हमें कुंभ के मेले के फोटो खींचने चाहिये।

चार धाम के खींचने चाहिये। उनका और उनकी पत्नी का भी एक फोटो यह दिखाने के लिये खींचना चाहिये कि किस तरह भारतीय लोग इस उम्र में तीर्थ यात्रा करते हैं। वरना इतने बड़े कैमरे का मतलब ही क्या है?

मुझे ये जगह इतनी पसंद आई थी कि मुझे यहाँ और दो दिन रहने में भी कोई ऐतराज नहीं था। लेकिन रात को बेहद ठंड थी और कमरों की स्वच्छता भी यथा तथा ही थी।

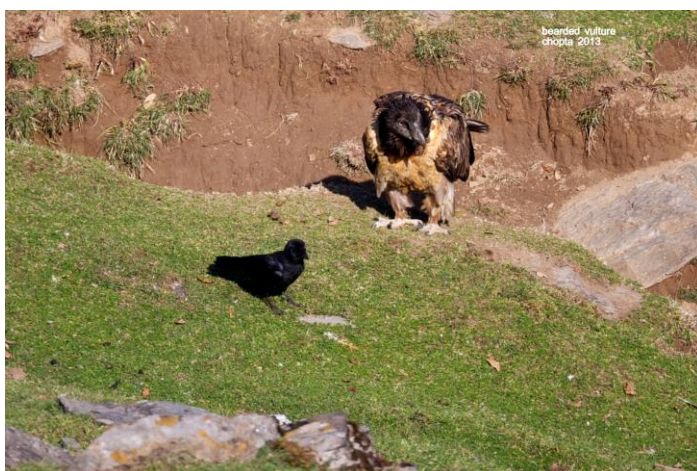
रात को उल्लू के बोलने की आवाज आने लगी तो धनंजय और सागर टॉच ले कर उसे ढूँढने निकले। लेकिन मिला नहीं। हॉटल वाले जितेंद्र का कहना था कि उल्लू बहुत दूर था और यहाँ पहाड़ों में उसकी आवाज गूँजती है।



दूसरे दिन 17 मई की सुबह मणि गाड़ी ले कर आ गया। हम बोरिया बिस्तर गाड़ी में डाल कर केदारनाथ कस्तूरी मृग विहार की ओर चल पड़े।

इधर उधर पेड़ों पर घोंसलों में बैठे गिद्ध दिखाई दे रहे थे। इतने गिद्ध अब भी बाकी हैं ये देख कर बेहद खुशी हुई।

मणि की नजर बहुत तेज है। रुद्रप्रयाग से चामोली में प्रवेश करने से कुछ पहले रास्ते में अचानक उसने गाड़ी रोकी और बोला नीचे वादी में गरुड़ जमीन पर बैठा है। सागर



ने खिड़की से झाँक कर देख और उछलना शुरू कर दिया।

रास्ते से बहुत नीचे कहीं एक बड़ा सा गिद्ध कुछ खाता बैठा था। उसके आस पास कौए मंडरा रहे थे।

गिद्ध का आकार इतना बड़ा था, कि कौए उसके सामने मच्छर की तरह लग रहे थे। मणि और धर्मा उसे

हड्डीतोड़ गरुड़ कह रहे थे।

उनका कहना था कि ये बड़ी बड़ी हड्डियाँ उठा कर ऊपर उड़ता है और ऊपर से हड्डी नीचे फेंकता है। फूटने पर हड्डी के अंदर का गूदा खाता है। अब तक हमें इस बात का अंदाज हो ही चुका था कि यहाँ लोग गिद्ध को गरुड़ ही कहते हैं।

सागर ने घोषित किया कि यह बिअर्डेड लॅमरगिअर वल्चर है। धनंजय ने कैमेरा उठाया और नीचे उतरना शुरू कर दिया। रास्ते से बहुत नीचे नदी किनारे वह कई कौवों के झुंड से घिरा कुछ खाने की कोशिश कर रहा था।

आधे घंटे बाद उसके फोटो खींच कर जब धनंजय और सागर लौटे तो उनके चेहरे पर ऐसे भाव थे ,मानो जीवन सफल हो गया हो।



मणि और धर्मा ने वादा किया था कि आज हर हालत में मोनाल दिखाएँगे। केदारनाथ कस्तूरा मृग विहार की ओर चले। रास्ते में अचानक बिल्कुल सामने एक बेहद खूबसूरत चट्टान पर खड़ी मोनाल की फीमेल दिखाई दी। उसने इतनी सुंदर जगह चुनी थी।

कुछ देर सब मंत्रमुग्ध उसे देखते रहे और अचानक उसने हवा में डाइव लगाई और वादी में गायब हो गई।



बड़ी देर तक हम मेल मोनाल का इंतजार करते रहे । इधर उधर आवाजें सुनाई दे रहीं थीं लेकिन दिखाई कुछ नहीं दिया।

हॉटल बद्री-केदार में नाश्ता किया। बेहद ठंड थी और बहुत भीड़ थी। बद्रीनाथ जाने वाले सारे यात्री जलपान के लिये वहीं रुक रहे थे। सामने ही एक चेकपोस्ट था, जहाँ हर गाड़ी ,ड्रायवर, सवारियों आदि की जानकारी ली जा रही थी। पता चला कि वापस आते समय भी चेक किया जाता है। इसकी वजह यह है कि यहाँ के रास्ते इतने धोखादायक हैं कि कभी भी, कहीं भी लॅण्ड स्लाइड या अपघात हो सकता है। यदि पूर्वनियोजित समय पर यात्री वापस ना आएँ तो उनकी तलाश शुरू की

जाती है।

रास्ते बहुत ही खूबसूरत थे। ढलान पर इतना घना जंगल था कि नीचे उतरना असंभव था। तरह तरह की आवाजें आ रहीं थीं ,लेकिन गाड़ियों के आवाज के कारण रास्ते के पास कोई पशु पक्षी नहीं थे।



कुछ समय वहाँ गुजार कर वापस चोपता पहुँचे। रास्ते के दोनों तरफ टपरी सी ढेरों दुकाने हैं पंच केदार में से एक होने की वजह से श्रद्धालुओं की भीड़ थी। बंगाली तीर्थ यात्रियों की संख्या यहाँ इतनी अधिक है कि जगह जगह दुकानों और हॉटलों के बाहर

बाँगला में लिखे बोर्ड दिखाई पड़ते हैं।

चोपता समुद्रतल से बारह हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यहां से तीन किमी की पैदल यात्रा के बाद तेरह हज़ार फुट की ऊँचाई पर तुंगनाथ मंदिर है, जो पंचकेदारों में दूसरा केदार है। यह मंदिर १,००० वर्ष पुराना माना जाता है। कहा जाता है कि यह विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित शिव मंदिर है

पांडवों को यहाँ बैलरूपि शिव के बाहु दिखे थे।

इस स्थान से एक अन्य कथा जुड़ी हुई है, कि भगवान राम ने रावण का वध करने के बाद ब्रह्म-हत्या शाप से मुक्ति पाने के लिये उन्होंने यहां पर शिव की तपस्या की थी। उन्होंने जिस स्थान पर बैठ कर तपस्या की वह स्थान चंद्रशिला के नाम से प्रसिद्ध है। चंद्रशिला तुंगनाथ मंदिर से दो किलोमीटर और आगे है।



बाकि केदारों की तुलना में यहाँ श्रद्धालुओं की संख्या थोड़ी कम होती है।

तुंगनाथ का पर्वत चढ़ना शुरू किया। पक्का सीमेंट का बना रास्ता है।



ठंड काफी थी। चढ़ाई भी अधिक थी, लेकिन कुछ ही देर बाद ऐसा महसूस होने लगा मानों सदेह स्वर्ग जा रहे हों।

चोपता के बारे में ब्रिटिश कमिश्नर एटकिन्सन ने कहा था कि जिस व्यक्ति ने अपने जीवनकाल में चोपता नहीं देखा उसका इस पृथ्वी पर जन्म लेना व्यर्थ है।

यहाँ आने पर एटकिन्सन की यह उक्ति अतिरेकपूर्ण नहीं लगती।



चढ़ते चढ़ते हर पाँच मिनिट में साँस फूलती है। लेकिन मिनिट भर दम लेने कि लिये रुकते ही जब चारों ओर नज़र जाती है, यहां का सौन्दर्य अद्भुत है, इसमें किसी को संदेह हो ही नहीं सकता। यह यात्रा किसी रोमांच से कम नहीं है।

तो उन सब लोगों की याद आने लगती है जिन्हें आप अपने साथ ला कर ये दृश्य एक बार तो अवश्य दिखाना चाहते हो। यहाँ अपनी फिटनेस कम होने का बेहद अफसोस होने लगता है।





एक ओर मीलों फैले हरी मखमली घाँस के बुग्याल, उस पर जहाँ तक नजर जाती है, वहाँ तक लाल, गुलाबी, सफेद बुरांश के फूलों से लदे पेड़। उनकी पृष्ठभूमि में बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियाँ।



और इस सब के साथ यहाँ का अदभुत वातावरण, ठंड और यहाँ वहाँ भटकते , आजू बाजू से गुजरते बादल। बगल के बुग्याल में स्थित बुरांश की झाड़ियों से मोनाल के आवाज सुनाई दे रहे थे।

रास्ते में जगह जगह बैठने के लिये बॅन्च भी बने हुए हैं। कहीं छोटी छोटी टपरी सी दुकानें हैं जहाँ पानी ,शरबत वगैरह मिलता है। लोग घोड़ों और खच्चरों से भी जा रहे थे और श्रद्धा से हाथ जोड़े नंगे पैर भी।

मेरे पैरों की हालत दर्द से बुरी थी। ऐसे ऐसे मसल्स भी महसूस हो रहे थे, जिनके होने का भी कभी पता नहीं था। पहले ही चढ़ने की आदत नहीं, उस पर पहले दिन देवरिया ताल, दूसरे दिन बनिया कुंड का बुग्याल और अब ये। सिर्फ मेरा स्वाभिमान मुझे घोड़े पर नहीं बैठने दे रहा था, वरना बीच बीच में मन तो हो रहा था।

अचानक सामने बहुत उपर से धनंजय जोर जोर से चिल्लाता हाथ हिलाता दिखाई दिया। मोनाल...मोनाल ,जल्दी आओ। सागर जो इतनी देर हमारे साथ पैर घसीटता चल रहा था जल्दी आओ कहता हुआ ऊपर को भागा। उपर से सागर, धनंजय, मणि,धर्मा सब हाथ हिला रहे थे, लेकिन यहाँ मेरे पैर हिलने को तैयार नहीं थे। हिमाचल में शिमला के चिड़ियाघर में जब पहली बार मोनाल देखा तो बिल्कुल मुग्ध हो गई थी। तब से हसरत थी वाइल्ड में मोनाल देखने की। थोड़ी जान लगा कर जैसे तैसे वहाँ तक पहुँची।

सागर के बिल्कुल सामने से रास्ता पार कर मोनाल दूसरी तरफ गया। जिस तरह सफारी से आने के बाद लोग, कैसे शेर ने रास्ता क्रॉस किया, इसका वर्णन करते हैं ना बिल्कुल उसी तरह पाँच फुट की दूरी से मोनाल ने रास्ता पार किया। तब तक में और ज्योती ताई भी पहुँच ही गये।

इतना सुंदर पक्षी हो सकता है ! आँखों पर विश्वास नहीं होता। थोड़ा सा उड़ कर वह पास की एक चट्टान पर जा बैठा।

ऐसा लगा
कौए से

मानों चमकते नीले, हरे, मोरपँखी रंग हवा में उड़ रहे हों।
थोड़ा बड़ा पक्षी है।



देखते ही देखते उसके आस पास कौए इकट्ठे हो गये और उसे सताने लगे। कुछ देर उसने कौओं से जूझने की कोशिश की फिर तंग आ कर हवा में एक डाइव लगाई और गायब हो गया।



मोनाल के दर्शनों से थकान जैसे गायब हो गई। मजे

की बात तो ये है कि एक तरफ हम लोग मोनाल देख कर पागल हुए जा रहे थे, वहीं दूसरी तरफ हमारे पीछे से गुजरने वाले श्रद्धालू बिना रुके सीधे चले जा रहे थे। उन्हें मोनाल से कोई मतलब नहीं था।



फिर चढ़ना शुरू किया। बीस पच्चीस मिनिट के बाद मंदिर तक पहुँच गये। गज़ब की ठंड थी। मंदिर के पास ठंड में जमीं बर्फ अभी भी नहीं पिघली थी।

मंदिर का प्रवेश द्वार



दरवाजे पर बैठा पाषाण नंदी



तिवारी जी की 'गढ़वाल का इतिहास' नामक किताब की वजह से मेरा ज्ञान थोड़ा विस्तारित था। केदार का संस्कृत मतलब है कीचड़। बर्फ पिघलने से हिमालय के उस भाग में दलदल हो जाती है। तो उस दलदलीय प्रदेश का स्वामी केदारनाथ।



तुंग यानि पर्वत की ऊँची चोटी । पर्वत शिखरों का स्वामी तुंगनाथ। तुंगनाथ पर्वत पर ठंड में जब बहुत बर्फ गिरने लगती है तब यहाँ के बाकी देवों की परंपरानुसार भगवान तुंगनाथ मुकु गाँव में ले जाए जाते हैं और छः महीने वहीं रहते हैं । चारधामों की तरह तुंगनाथ के पुजारी भी दक्षिण भारतीय नहीं हैं बल्कि मुकु गाँव के ही हैं।

मंदिर बेहद पुराना और सचमुच पांडव कालीन लग रहा था।



धनंजय ने बहुत आग्रह किया ,लेकिन हम बाकी तीनों की हिम्मत नहीं हुई चंद्रशिला चढ़ने की।

मैंने फिर कसम खाई कि अगली बार अपना फिटनेस सुधार कर चंद्रशिला अवश्य जाऊँगी। सुना है वहाँ से दिखने वाला दृश्य अद्वितीय है। और अज्ञेय की पंक्तियाँ याद आई...

मैंने आँख भर देखा।

दिया मन को दिलासा

पुनः आऊँगा।

(भले ही बरस-दिन-अनगिनत युगों के बाद!)

क्षितिज ने पलक-सी खोली,

तमक कर दामिनी बोली-

“अरे यायावर ! रहेगा याद?”



बादल छाने लगे थे इसलिये धनंजय ने भी जाने का विचार त्याग दिया। मांदिर के बाहर ही एक छोटे से हॉटल में कॉफी पी। सागर ने मँगी खाई।

अब तक मैं इस नतीजे पर पहुँच चुकी थी कि उत्तरांचल का राज्य खाद्य पदार्थ मँगी है। मँगी की मार्केटिंग आश्चर्यकारक है। बिल्कुल दुर्गम भागों में जहाँ पानी नहीं, बिजली नहीं, जहाँ वाहन नहीं जाते। इंसानों के रहने की कोई मूलभूत सुविधा नहीं वहाँ भी मँगी और बिसलरी की पानी की बोतल सहजता से मिल जाती है।

भारत सरकार को शिक्षा और वैद्यकीय सुविधाएं भारत के कोने कोने में पहुँचाने की जिम्मेदारी इन्हीं कंपनियों को दे देनी चाहिए।

बिल्कुल बीच जंगल में स्थित तीन बाय तीन की झोपड़ी में चाय की दुकान चलाने वाली साठ साल की बूढ़ी अम्मा भी बेझिझक पूछती है “मँगी बना दें?”

यहाँ बहुत सब्जियाँ तो मिलती नहीं , तो रोटी के साथ सब्जी की जगह मँगी, चावल के साथ दाल की जगह मँगी या फिर सिर्फ मँगी ये तीनों पर्याय सदैव उपलब्ध हैं। इनके अलावा इससे बेहतर बस एक ही चीज है, वह है आलू परांठा। वह भी हर जगह मिल ही जाता है।

9.30 पर हमने चढ़ना शुरू किया था। हमारी चढ़ने की धीमी रफ्तार देख कर मणि और धर्मा को लगा था कि हम शाम तक ऊपर पहुँचेंगे और हमें रात वहीं किसी हॉटल में गुजारनी होगी। ऊपर बेसिक सुविधाओं वाले कुछ छोटे हॉटल हैं। जो पक्षी प्रेमी सुबह सवेरे मोनाल के दर्शन करना चाहते हैं वे अक्सर रात वहीं गुजारते हैं।

लेकिन हम जैसे तैसे एक बजे तक मंदिर पहुँच ही गये। और किस्मत से हमें मोनाल भी दिख गया था। आसमान काले बादलों से घिर गया था।

2.45 पर हमने उतरना शुरू किया। धनंजय हमें कोई ऐसा दृश्य दिखाना चाहता था जो हम जिंदगी भर याद रखेंगे। जब वापस उस जगह पर पहुँचे जहाँ मोनाल दिखा था, तो वह हमें रास्ते के पास वाली एक चट्टान पर ले गया। आते समय मोनाल की खोज करते समय उसे यह अदभुत दृश्य दिखा था।



वह एक बड़ी सी चट्टान थी और उसके बाद सीधे एकदम गहरी खाई थी। वहाँ खड़े हो कर नीचे देखने में भी डर लग रहा था। उसने हमें वादी की ओर मूँह करके उस चट्टान पर पेट के बल लेटने को कहा। वहाँ लेट कर नीचे का जो दृश्य दिखा वह वाकई माइंड ब्लोइंग था। नीचे गहरी खाई थी। ऐसा लग रहा था हम मानो उड़ रहे

हों। ढलान पर बुरांश के पेड़ लाल रंग के फूलों से लदे हुए थे। बीच बीच में जमें हुए बर्फ के झरने थे। नीचे कहीं सफेद रेखा सी नदी बह रही थी। यहाँ तक की यहाँ की घाँस का रंग भी अलग ही था। वादी के दूसरी ओर कोहरे के ऊपर बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियाँ थीं।

फिर चंद्रशिला ना जा पाने का दुख हुआ। लौटते समय एक दुकान में बुरांश का जूस पिया और जैसे जान आ गई।

चढ़ने से ज्यादा उतरना कठिन था। ढलान बहुत थी। थोड़ी थोड़ी बारिश शुरू हो गई थी।

चार बजे तक नीचे पहुँचे तब तक धुआँधार बारिश होने लगी थी। चोपता के एक हॉटल में गरम गरम भजिये खा कर वापस उखीमठ पहुँचे। अनुश्री लॉज में हमारा कमरा दूसरी मंजिल पर था। मुझे डर था कि शायद मैं अब उतना भी नहीं चढ़ पाऊँगी। लेकिन पैर दुखना आश्चर्यकारक रूप से कम हो गया।

रात जल्दी सोए। अगले दिन सुबह थोड़ी देर से यानि 6.30 बजे निकलना तय हुआ था।



18 मई को सुबह सुबह बनतौली कि ओर चल पड़े। तिवारी जी को बहुत आश्चर्य हो रहा था कि यदि हमें मधमहेश्वर नहीं जाना है तो हम बनतौली क्यों जा रहे हैं ? बनतौली गाँव मधमहेश्वर के रास्ते में है। रांसी नामक गाँव से साढ़े छः किलोमीटर पैदल चल कर यहाँ पहुँचते हैं। सुना था कि रास्ता बेहद सुंदर है। नदी के किनारे किनारे से जंगलों के बीच से पगडंडियाँ जाती हैं। एक दिन हम वहाँ रुकने वाले

थे इसलिए कुछ सामान ले जाना ज़रूरी था। धर्मा ने एक पोर्टर साथ ले लिया।

धर्मा नेपाली है , लेकिन कई पीढ़ियों से उसका परिवार यहीं उत्तरांचल में है। वह मनसुखा नामक गाँव का रहने वाला है और उसका बुरांश और माल्टा का जूस बनाने का व्यवसाय है। इसके लिए वह फूलों के मौसम में मजदूर लगा कर जंगलों से बुरांश के फूल इकट्ठा करता है। फिर उन फूलों को पानी में उबाल कर उनका अर्क निकाला

जाता है। इस लाल रंग के अर्क में फिर शक्कर और प्रिजरवेटिव मिला कर वह लोकल व्यापारियों को बेचता है। उसकी केदारनाथ में एक चाय की दुकान भी है जो उसका भाई चलाता है। लेकिन यह उसके मुख्य व्यवसाय नहीं है। मूलतः वह ट्रेकिंग गाइड है। हिमालय पर ट्रेकिंग करने वालों के साथ वह आम तौर पर पहाड़ों में ही घूमता रहता है।



बिच्छू बूटी

पक्षियों के बारे में उसे कोई विशेष जानकारी नहीं थी लेकिन उसका पेड़ पौधों और हिमालयीन जड़ीबूटियों का ज्ञान प्रशंसनीय था। उसने हमें वज्रदंती से लेकर बिच्छू बूटी तक बहुत से पौधे दिखाए।



ब्रैकेट फंगस, दिखता बहुत सुंदर है लेकिन इसकी वजह से बड़े बड़े वृक्ष भी सूख कर नष्ट हो जाते हैं।

रास्ते में कहीं बड़े संतरे के आकार के नींबू देख कर मैंने उसे बताया कि इन नींबूओं के छिलके मैं केक में डालती हूँ, पर ये पूना में आसानी से नहीं मिलते। यदि मुझे एक पेड़ मिल जाए तो मैं वह पुणे ले जाना चाहूँगी।

उसने तुरंत किसी पेड़ों की नर्सरी वाले से संपर्क कर यहाँ के गलगल नींबू का एक पौधा मंगवाया।

जिसे हमने तिवारी जी की देखरेख में रख दिया था।

निकलने से पहले धर्मा हमें मनसुखा गाँव ले गया और दो बोतल बुरांश और माल्टा का जूस साथ लिया।



नौ बजे तक रांसी गाँव पहुँचे। मणि हमें वहाँ छोड़ कर वापस उखीमठ चला गया।

बनतौली की ओर चलना शुरू किया। रांसी से आगे रास्ता इतना संकरा था कि एक बार में एक ही व्यक्ति चल सकता था। जैसा हमने वर्णन सुना था उससे यह रास्ता बेहद अलग था। रास्ते के एक तरफ पहाड़ था, दूसरी तरफ गहरी ढलान थी, जिस पर घने पेड़ थे और सैकड़ों फुट नीचे नदी नजर आ रही थी।

कुछ ही देर में धूप बहुत बढ़ गई। कहीं कहीं जहाँ रास्ते में पेड़ थे वहाँ बहुत मजा आता, लेकिन ज्यादातर धूप ही थी। कहीं कहीं रास्ता बहुत खराब भी था। काफी संभल कर चलना पड़ता। फिर भी धर्मा के हिसाब से हम लोग बहुत किस्मत वाले थे। वह तो जीवन में पहली बार रांसी तक गाड़ी से आया था। पिछले दो साल से रांसी तक का रास्ता बन कर तैयार तो था, लेकिन गोनी गाँव के पास एक पुल से उसे बाकी रास्ते से जोड़ना बाकी था। कुछ ही दिन पहले यह काम पूरा हुआ। वरना कुछ

दिन पहले तक उनियाना से गोनी और फिर वहाँ से रांसी ऐसा २ किलोमीटर का ट्रेक करना पड़ता था।



बीच में एक जगह रास्ता बेहद खराब था। ढलान पर ढीली मिट्टी फिसल रही थी। मुझे उतरते समय थोड़ा डर लग रहा था। हमारे पोर्टर ने पास की किसी झाड़ी से एक डंडा तोड़ दिया। डंडा हाथ में ले कर उस रास्ते पर चलना इतना आसान हो गया कि क्या कहूँ। अब तक बिना डंडे के चलने का अफसोस होने लगा। कुछ ही देर में धर्मा, धनंजय, पोर्टर सब आगे निकल गये। रास्ता बस एक ही था तो हमारे खोने का कोई सवाल ही नहीं था। हमारे बैग भी उनके पास थे। धूप बहुत ज्यादा तेज थी। हमारी पानी की बोतलें भी उनके साथ ही गईं। जेब में कुछ चॉकलेट थीं वही चूस कर काम चल रहा था।

करीब चार किलोमीटर चलने के बाद जब दूर से एक गाँव दिखा तो लगा बनतोली आ गया। पर वह गौंदारा था। मारे प्यास के हालत इतनी खराब हो रही थी कि एक गोल्डन ईगल मुँह में एक बड़ा सा पाइका चूहा दबा कर बिल्कुल सामने से गया लेकिन रुक कर देखने की इच्छा नहीं हुई।



रास्ते में दो छोटे छोटे सात आठ साल के बच्चे दिखे जो स्कूल से वापस घर जा रहे थे। वे बनतोली के रहने वाले थे और रोज गोंदारा के स्कूल में आते थे। यहाँ रास्ते चलता जो भी बच्चा दिखता है वह हाथ जोड़ कर नमस्ते अवश्य करता है। चॉकलेट खा कर उन्होंने बनतोली में मिलने का वादा किया और आगे भाग गये।

बाकी सारे रास्ते कोई नहीं मिला। मदमहेश्वर के कपाट अभी बंद थे और भगवान की डोली अगले दिन गोंदारा से निकलने वाली थी।



ढाई किलोमीटर और चल कर करीब 1.30 बजे बनतोली गाँव पहुँचे। गाँव क्या था दस बारह कच्चे पक्के मकानों का एक समूह था। दो तरफ से दो नदियाँ आकर मिल रही थीं। उनके संगम पर ही यह गाँव था। एक नदी पर छोटा पुल था वह पार कर गाँव में पहुँचे। तब तक मेरी हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि एक कदम भी चला नहीं जा रहा था। वहाँ जा कर पता चला कि हम जहाँ रुकने वाले थे वह विश्व लॉज सामने की एक छोटी पहाड़ी पर है। साधारण पुणे की पर्वती जितनी ऊँचाई पर वह लॉज दिखाई दे रही थी। मेरा राने को मन करने लगा। जैसे तैसे पाँव घसीटते हुए मैं और ज्योति ताई साधारण पाँच मिनिट प्रति मीटर की रफ्तार से लॉज तक पहुँचे।

कमरे ठीक ठाक थे। लेकिन हर कमरे कम से कम तीन चार सौ मखिखयाँ थीं। और वैसे भी मुझे अब तो हर चीज पर गुस्सा आ रहा था। लॉज का मालिक मधमहेश्वर की डोली लेने गोंधारा गया हुआ था। उसके बूढ़े माँ बाप थे। खाने के लिये मँगी थी ही। धनंजय को मँगी पसंद नहीं ये अब तक धर्मा जान चुका था तो उसने ही चूल्हा जला कर रोटी और दाल बना दी।

मखियाँ भगाते भगाते खाना खाया । धनंजय का उत्साह और जोश तो हमेशा से अमानवीय ही हैं। उसे सब कुछ बहुत बढ़िया लग रहा था। खाना खा कर वह बोला “चलो नीचे नदी तक घूम आते हैं।” मैंने सोचा नीचे तो चले जाएँगे , लेकिन फिर ऊपर कैसे आएँगे।

धनंजय, सागर ,धर्मा नीचे चले गये।मैं और ज्योति ताई कुछ देर सोने की कोशिश करने लगे। मखियों से बचने के लिया मुँह पर चादर ली , तो मखियाँ चादर में घुस कर काटने लगीं। आखिर तंग आ कर हम भी अपने डंडे ले कर लंगड़ाते लंगड़ाते नीचे चल पड़े।



नदी बेहद सुंदर थी, पानी अमृत की तरह मीठा, साफ और बर्फीला था। एक डेढ़ घंटा वहीं गुजार कर नीचे के गाँव वाले एक घर में पहुँचे। दोपहर को जाते समय देखा था बाहर आशुतोष लॉज की तख्ती थी। तभी आशुतोष नामक एक बच्चे से मुलाकात भी हुई थी। वह और सबह स्कूल से आने वाले बच्चे भी यहीं मिल गये।

पता चला आशुतोष लॉज वालों का आशुतोष अलग था। नाम अच्छा लगा इस लिए बहुत से लोगों ने अपने बच्चों का नाम यही रख लिया है। बाहर एक बोर्ड बाँगला में भी था। मैंने पूछा “यहाँ बंगाली किसको आती है?” पता चला किसी को नहीं । बंगाली यात्री बहुत होते हैं ,इसलिये एकबार ऐसे ही एक यात्री से चॉक से बोर्ड पर लिखवा लिया था, बाद में उस पर ही पेंट कर दिया। उम्मीद है लॉज का नाम ही होगा।

लॉज के मालिक की बेटी मीना ने इतनी बढ़िया चाय पिलाई कि दिल खुश हो गया। मैंने उससे पूछा कि उसके यहाँ रहने की जगह है क्या।



बिल्कुल नये बनाये तीन कमरे थे जिनमें कमोड वाला अटॅच्ड टॉयलेट भी था। खाली तो थे, लेकिन उन लोगों में अचानक तनाव फैल गया। कुछ देर में वह पिता शिवसिंह पँवार को बुला लाई। उन्हें मालूम था कि हम कैलाश लॉज में रुके हैं और हमने काफी दिन पहले बुकिंग की थी। उन लोगों को क्या लगेगा। नाराज हो जाएँगे। मैंने कहा हम उनके पूरे पैसे भर देंगे, पर मैं अब ऊपर नहीं चढ़ सकती।

उसकी पत्नी बोली “उन्होंने शाम का खाना भी बना लिया होगा। वो बरबाद हो जाएगा। यहाँ राशन रांसी से लाना पड़ता है।”

आखिर धर्मा और तेजसिंह कैलाश लॉज गये। उन लोगों ने कोई आपत्ती नहीं दिखाई और सिर्फ सुबह के खाने के अस्सी रुपये लिए। ज्यादा पैसे लेने से भी इंकार कर दिया।

वे नाराज नहीं हैं इस बात की तसल्ली होने पर तेजसिंह ने बढ़िया राजमा चावल बनवाए। वह बहुत ही मज़ेदार आदमी था। उसे हर समय इस बात की चिंता रहती कि कोई नाराज ना हो जाए। चाय भी ले कर आया तो पूछने लगा ,चाय ठीक है ना? आप नाराज तो नहीं हो?

चाय पसंद आई ये जान कर खुश हो गया कहने लगा “बस आप नाराज मत होना, आदमी को खुशी होनी चाहिए ,और क्या चाहिए।”

उसके बाद जितनी बार सामने दिख जाता हर बार पूछ ही लेता कि आप नाराज तो नहीं हो। “खाने में सेवई की खीर बनवाई है ,आप नाराज मत होना”

“इसमें नाराज होने वाली क्या बात है, ये तो अच्छी बात है”

“अच्छा तो मैं भी हूँ, लेकिन आदमी को खुशी होनी चाहिए, और क्या चाहिए? तो बस आप नाराज मत होना”

मुझे बात करने का ये तरीका ही इतना मज़ेदार लगा कि मैं सोचने लगी कि यदि घर जा कर मैं भी इसी तरह बात करूँ तो कैसा रहे?

“आज खाने में क्या है ?”

“लौकी की सब्जी है,लेकिन आप नाराज मत होना, खुशी होनी चाहिए।”

रात को जब सोने कमरे में पहुँचे तो एक बहुत ही बड़ी एकदम ब्लैक विडो टाइप की मकड़ी दीवार पर थी। तेजसिंह को बुलाया तो बोला आप नाराज मत होना वो कुछ नहीं करती। आप तो सो जाओ। हमने कहा फिर भी उसे बाहर निकाल दो, तो उसकी मकड़ी के पास जाने की हिम्मत ही ना हो रही थी।

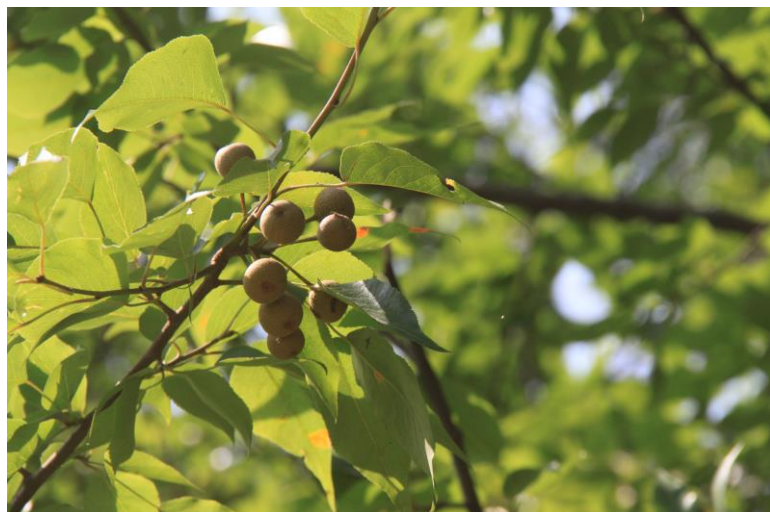


आखिर बहुत बहादुरी दिखा कर उसने मकड़ी को मेरे चलने वाले डंडे से वहीं दीवार पर कुचल दिया। अपने ही लॉज की दीवार गंदी करने में उसे जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। हमें नाराज ना होने की सलाह दे कर वो चला गया।



दूसरे दिन उठे तो चाय नाश्ता करके निकलने से पहले धर्मा ने आस पास के पेड़ दिखाए, जिसमें खुबानी, अखरोट वगैरह थे। तेजसिंह के घर उसी पेड़ के अखरोट थे जो हमने चालीस रुपये किलो खरीदे।

घर आ कर बहुत कोशिश की लेकिन वे इतने कड़क थे कि एक भी नहीं फोड़ते बना। सारे फेंक देने पड़े।



उत्तरांचल के इस पूरे सफर में मैं अक्सर

नदियों के नामों में गड़बड़ कर रही थी।

धर्मा को इस बात से शायद बड़ी तकलीफ हो रही थी। आखिर उसने एक कागज पर सारी नदियों का एक नक्शा बना कर ला दिया। प्रयागों के बारे में भी मेरी एक क्लास ली। दो नदियों के संगम को प्रयाग कहते हैं। उत्तराखंड में पाँच मुख्य प्रयाग हैं। विष्णु प्रयाग, नंद प्रयाग, कर्ण प्रयाग, देव प्रयाग और रुद्र प्रयाग।



बनतोली गाँव एकदम मोरखंडा और नंदाकिनी के संगम पर ही स्थित है। ये आगे जा कर मधुगंगा कहलाती हैं, जो मंदाकिनी की उपनदी है।

निकलते समय हमने धर्मा का बुरांश का जूस दो दो ग्लास पिया। यहाँ लोगों का कहना है कि उसमे मेडिसिनल गुण हैं। जो भी हो जूस पी कर एकदम तरोताज़ा लगने लगा।

मैंने अपना डंडा उलटी तरफ से पकड़ा और हमने वापस लौटना शुरू किया। लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि हम यहाँ तक आ कर मधमहेश्वर ना जाकर वापस लौट रहे हैं। बनतोली के बहुत से लोग डोली लाने गोनदारा गये हुए थे।

आसमान में थोड़े बादल छाए थे। इसलिए सारा वातावरण ही बदल गया। कल की थकान जाने कहाँ गायब हो गई। रास्ते में बहुत से लोग मिल रहे थे जो पैरों में साधी चप्पल पहने गोद में बच्चे लिये मधमहेश्वर की दिशा में जा रहे थे। जाने वाला हर आदमी सामने से आने वाले का अभिवादन जय बाबा भोलेनाथ या जय मधमहेश्वर कह कर करता। एक सज्जन मिले जिन से रुक कर कुछ देर बात की और ये देख कर दंग रह गई कि उनके दोनों हाथ नहीं थे। लेकिन वे काफी मजे में थे। अपनी कल की अवस्था पर शर्म आई। आज धूप ना होने की वजह से था या बुरांश जूस का

असर था मालूम नहीं लेकिन बिल्कुल भी थकान नहीं थी। और फिर रास्ता, नदी, जंगल सब बेहद सुंदर लगने लगे।



वे पहले भी सुंदर ही थे लेकिन आज उनके सौंदर्य को सराहते बना। एकदम सुहाना सफर और ये मौसम हंसी हो गया। फिर खुद से वादा किया कि अगली बार जरा फिट हो कर आना है और पंच केदार करना है। तुंगनाथ हो आए, मधमहेश्वर भी आधे रास्ते तक पहुँच ही गये थे। डेढ़ केदार तो हो ही गया।



गोंदारा से कुछ पहले मधमहेश्वर की डोली मिल गई। साथ बजंत्री बजाने वाले, बहुत से आस पास के गाँव के श्रद्धालू, एक कोई पगड़ी लगाए स्वामी जी जो घोड़े पर सवार थे, और बहुत से बंदूक धारी पुलिस वाले थे। सब मिला कर कुल तीस चालीस लोग होंगे, लेकिन उस रास्ते पर वह बहुत भीड़ लग रही थी। पीछे धीरे थक कर बैठे पुलिसवालों ने हमसे बातचीत शुरू की कि आप कहाँ से आ रहे हो, कपाट खुलने के समय वापस क्यों जा रहे हो वगैरह।

मैंने उनसे पूछा कि भगवान को इतने सारे पुलिस प्रोटेक्शन की जरूरत क्या है?

उन्होंने बताया कि डोली में भगवान का कई किलो सोना चांदी है। इसलिए कड़ी सुरक्षा की जाती है।

मैंने कहा “ हम घर से इतनी दूर हिमालय में भगवान भरोसे घूम रहे हैं, और भगवान खुद यहाँ आप के भरोसे हैं।”

इस पर वे एकदम चौंक गये। एक कहने लगा “बहन जी बहुत बड़ी बात कह दी आपने।” उसने एक दो दफा मेरी बात दोहराई और वे चारों तेजी से उठ कर डोली के पीछे भागे।



रांसी के पास पहुँचे तो बड़े बड़े बर्तन उठाए नौजवान दिखे। डंडों में उन्होंने बड़ी बड़ी डेगचियाँ और कढ़ाईयाँ लटका रखी थी और दो दो मिल कर उठा रहे थे। पता चला जिस दिन डोली वापस निकलती है उस दिन सारे गाँव का भोज होता है। ये

सब रांसी के लोग बर्तन और राशन लेकर गोंदारा गये थे और वहीं उन्होंने खाना पकाया। एक लड़के की बाल्टी में फर्न के पत्ते थे। यही फर्न हमने देवरिया ताल में भी खाया था।

चलते चलते उन बच्चों से बात करने लगी। सभी साधारण दसवी से बारहवी क्लास तक के थे। पता चला वहाँ आसपास कोई कॉलेज नहीं था। मैंने पूछा “ फिर आगे पढ़ने कहाँ जाओगे?”



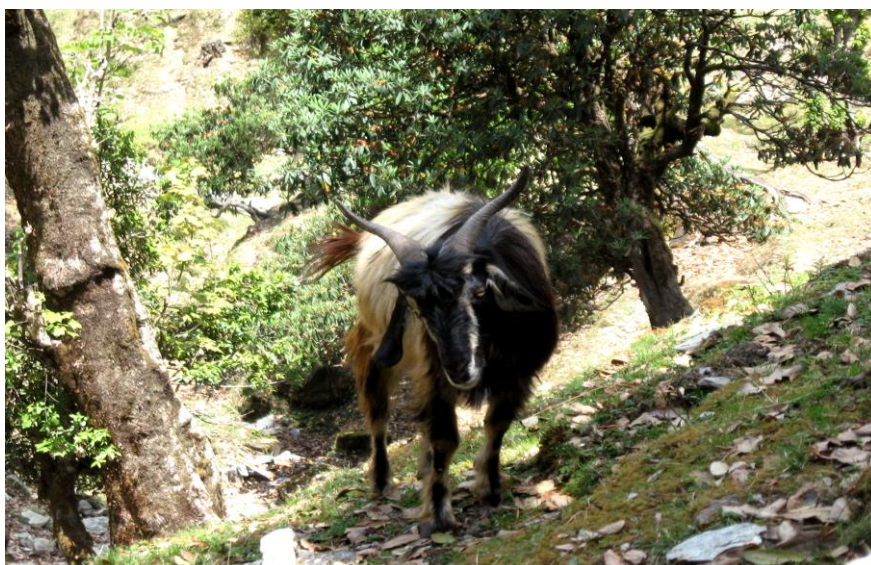
एक बोला “ आगे नहीं पढ़ना है। इतनी ही पढ़ाई काफी है। ज्यादा पढ़ने से माइंड डिस्टर्ब हो जाता है।”

सभी उसकी बात से सहमत थे। उनके गाँव में एक बार एक आदमी ने बीएससी किया था तब

उसका माइंड डिस्टर्ब हो गया था।

आगे जा कर क्या करेंगे ये पूछने पर पता चला कि यहाँ बहुतांश लड़के मिलेट्री में जाने के ही सपने देखते हैं। रोजगार के अवसर यहां बहुत कम हैं। जो मिलेट्री में नहीं जाते वे खेती के साथ साथ या तो टैक्सी चलाते हैं या फिर टूरिस्ट गाइड बन जाते हैं। थोड़ा पैसा हो तो चाय की दुकान या हॉटल खोल लेते हैं। पढ़ कर यदि रोजगार के लिये पहाड़ों से नीचे जाना पड़े तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। हमारे ड्रायवर मणि का कहना था कि ऋषिकेश के पास पहुँचते ही उसे प्रदूषण के कारण सर्दी हो जाती है।

उनके गाँव में अस्पताल या आस पास भी नहीं था।



वे बच्चे वैसे काफी स्मार्ट लग रहे थे। एक ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से आई हूँ। जब मैंने पुणे का नाम लिया तो सब एक दूसरे के मूँह ताकने लगे। मैंने पूछा “ पता है पुणे कहाँ है?” तो एक ने हाथ उठा कर जवाब दिया कि भारत में।

फिर मैंने जमीन पर भारत का नक्शा बना कर उन्हें पुणे दिखाया।

उनसे बात करते करते रास्ता कैसे कट गया पता ही नहीं चला। चार घंटे में रांसी पहुँच गये। रांसी में हमें लेने मणि आया हुआ था। रांसी में फिर बुरांश का जूस पिया और वापस उखीमठ चल पड़े। आज आश्चर्यजनक रूप से पाँव बिल्कुल नहीं दुख रहे थे और जरा भी थकान नहीं थी। रास्ते में रुकते ,फोटो खींचते वापस अनुश्री लॉज पहुँच गये।



यहाँ आकर जैसे रोज सवेरे आराम हराम का नारा लगा कर हम सुबह साढ़े पाँच बजे उठ जाते। रात को कितने भी बजे सोएं, लेकिन सुबह कोई आलस नहीं करता।

20 मई को सुबह सवा छह बजे उखीमठ से निकले और सात बजे यशपाल सिंह नेगी के घर काकडागढ पहुँच गये। वे इस

प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध बर्ड गाइड हैं और मॅगपाय बर्ड कॅम्प के मालिक हैं। उनके घर में ही एक छोटा सा दो कमरों का लॉज है। सामान रख कर तुरंत ही उनके साथ पक्षी दर्शन को निकल पड़े। नेगी जी का घर मंदाकिनी नदी के किनारे है। उनके घर ही में इतने पक्षी दिख जाते हैं कि वहीं बाहर बैठ कर पूरा दिन गुजारा जा सकता है।

नदी पार कर हम काकडाघाट के जंगल में ही दोपहर तक का वक्त गुजारा। जॅकरॅण्डा के फूलों से सारा आलम नीला था।



रास्ते में बेहद सुंदर क्रिमसन सनबर्ड देखा। वापस लौटकर हम तो वहीं नदी किनारे वाले डेक पर जम गये। धनंजय अकेला ही सारा दिन नेगी जी के साथ घूमता रहा। नदी किनारे की चट्टानों में ब्लू व्हिस्टलिंग थ्रश का घोंसला था। जिसमें बैठे बच्चे दूरबीन से दिख रहे थे। घर के बगल वाले पेड़ पर सारा दिन ग्रेट बारबेट, ब्लू थ्रोटेड बारबेट, स्पॉटेड स्टार्लिंग आदि का आना जाना लगा ही रहता है।



blue-throated barbet
chopta 2013

कई दिनों में ये पहला दिन था, जो कुछ आराम से गुजरा।





२१ मई की सुबह साढ़े पाँच बजे हम सब तैयार थे। मणि गाड़ी ले कर आ ही गया था। नेगी जी के साथ हम मुकुमठ की ओर चल पड़े।

कुछ देर चोपटा में गुजार कर मुकुफार्म पहुँचे। बेहद सुंदर जंगल था। एक ग्रेट बारबेट गला फाड़ कर चिल्ला रहा था। उसका बहुत ही अच्छा वीडियो आया। जंगल सफेद गुलाब के फूलों से भरा हुआ था और वातावरण में बहुत बढ़िया खुशबू फैली हुई थी।



मुकु का जंगल वन विभाग के अधीन नहीं है, वरन ग्राम पंचायत ही इसकी देखभाल करती है। इस जंगल के लिये एक विशेष वन पंचायत होती है, जिसके वन सरपंच आदि पदाधिकारी भी होते हैं।

यदि गाँव में किसी को घर की मरम्मत के लिये लकड़ी की ज़रूरत हो तो वन पंचायत यह तय करती है कि उसे कौनसा पेड़ काटने की अनुमती दी जाए और उसके कितने पैसे लिये जाएं। सारा गाँव इस जंगल की देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेता है।



मुकु गाँव में नेगी जी के घर भी गये। वहाँ की बिल्ली को हमारे बारे में बेहद उत्सुका थी। थोड़ी दूर से वह हम पर नज़र रख रही थी।

वहाँ युरेशियन कुक्कू मानों उनके बुलाने पर हाजिर हुए।

जंगल में बहुत से पक्षी दिखे। नेगी जी जब उनके मोबाइल पर उल्लू का कॉल बजाते तो बहुत से पक्षी बाहर निकल कर देखने लगते।



गाँव की एक चक्की के सामने के पेड़ पर ग्रेट बारबेट का घोंसला था। बहुत देर वहीं बैठ कर मँगी खाते हम मेल फीमेल दोनों को आते जाते देखते रहे।





great barbet
chopta 2013

आज के दिन तक पक्षियों की फेरहिस्त काफी लम्बी हो गई थी।

दिन बहुत बढ़िया गुजरा।

रात वहीं काकडागढ में गुजार कर दुसरे दिन सुबह फिर मणि और धर्मा के साथ हम निकल पड़े।



अगले दो दिन हमारा कोई तय प्रोग्राम नहीं था। चोपटा-मंडल के जंगल में घूमते रहे वन विभाग द्वारा लगाए गये जंगल मे हम लोग करीब चार घंटे घूमें ,लेकिन उस दौरान कोई पक्षी, प्राणी या इंसान दिखाई नहीं दिया।



फिर एक बार बनतोली के बुग्याल में जाना तय था। इस बार बिना थके हम ऊपर वाले बुग्याल तक पहुँच गये। ना पैर दुखे ना पहले की तरह साँस फूली।



दोनों अम्माएं हमें फिर देख कर खुश हो गईं।

ऊपर वाला बुग्याल सचमुच स्वर्ग ही था। हिमालय का नाम भी निकले तो मेरे नगपति मेरे विशाल याद आता है। कवि रामधारी सिंह दिनकर की कविता की ये पंक्तियां हिमालय प्रत्यक्ष देख कर याद ना आती तो ही आश्चर्य था।



युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त,
 युग-युग गर्वोन्नत, नित महान,
 निस्सीम व्योम में तान रहा
 युग से किस महिमा का वितान?
 कैसी अखंड यह चिर-समाधि?
 यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?

तू महाशून्य में खोज रहा
 किस जटिल समस्या का निदान?
 उलझन का कैसा विषम जाल?
 मेरे नगपति! मेरे विशाल!

सामने से एक मोनाल उड़ता हुआ गया।

सारा वातावरण एकदम जादुई था।

मन ही मन बाबा भोलेनाथ से प्रार्थना कर डाली कि एकबार फिर बुलावा अवश्य भेजना।



लौटते समय चोपटा मंडल के जंगल में धनंजय को चेस्ट नट हेडेड टेसिया दिख गई। उसका फोटो खींचने में उसे पूरे दो घंटे लगे।

शाम को जब हम वापस उखीमठ पहुँचे तब तक हमने फोटो खींचे पक्षियों की संख्या 105 से ऊपर हो चुकी थी। सिर्फ देखे ,लेकिन फोटो नहीं ,ऐसों की संख्या तो बहुत अधिक थी।

उत्तराखंड के इस दस दिन के प्रवास के दौरान हमें ये पक्षी दिखाई दिये, जिनके फोटो भी खींचे गये।

1. babbler black chinned
2. babbler scimitar streak breasted
3. barbet blue throated
4. barbet great
5. black bird grey winged
6. black bird white collared
7. bulbul black
8. bulbul Himalayan

9. bushchat grey male
10. bushchat grey female
11. bushchat pied
12. crow large billed
13. cuckoo Eurasian
14. cuckoo shrike black winged
15. dipper brown
16. eagle crested serpent
17. eagle golden
18. fantail white throated
19. flower pecker fire breasted
20. flycatcher Asian brown
21. flycatcher blue throated
22. flycatcher grey headed canary
23. flycatcher paradise female
24. flycatcher rufus gorgeted
25. flycatcher shrike bar winged female
26. flycatcher shrike bar winged male
27. flycatcher slaty blue female
28. flycatcher ultra marine
29. forktail spotted
30. francolin black male
31. grosbeak black and yellow
32. jay black headed



33. jay Eurasian
34. kestrel common
35. kingfisher crested
36. laughing thrush Bhutan
37. laughing thrush chestnut crowned
38. laughing thrush striated
39. laughing thrush variegated
40. laughing thrush white throated
41. magpie red billed blue
42. magpie yellow billed blue
43. minila chestnut tailed
44. minivet long tailed
45. minivet scarlet female
46. minivet scarlet male
47. monal female
48. monal male
49. munia white rumped
50. Niltava small female
51. niltava rufus bellied
52. niltava small male
53. nut hatch chestnut bellied
54. nut hatch white-tailed
55. oriole maroon
56. parakeet slaty headed

57. pigeon common wood
58. pigeon speckled wood
59. pigeon wedge tailed green
60. pipit olive backed
61. pipit rosy
62. prinia striated
63. redstart blue fronted
64. redstart plumbeus female
65. redstart plumbeus male
66. rock thrush chestnut bellied female
67. rock thrush chestnut bellied juv.
68. rockthrush blue capped female
69. rockthrush blue capped male
70. sparrow russet's female
71. sparrow russet's male
72. starling chestnut tailed
73. starling spot winged
74. stonechat common
75. sunbird black throated
76. sunbird crimson
77. sunbird gould's
78. swift alpine
79. tesia chestnut headed
80. thrush blue whistling

81. thrush mistel's
82. thrush pied
83. t hrush tickell's male
84. thrush tickell's female
85. tit black lored
86. tit grey
87. tit grey crested
88. tit spot winged
89. tree creeper bar tailed
90. tree creeper huston's
91. tree creeper rusty flanked
92. treepie grey
93. verditer
94. vulture Himalayan griffon
95. vulture lammergear
96. warbler black faced
97. warbler greenish
98. warbler grey hooded
99. warbler lemon rumped
100. white eye oriental
101. woodpecker brown capped pigmy
102. woodpecker brown fronted
103. woodpecker grey capped pigmi
104. woodpecker grey headed

- 105. woodpecker himalayn
- 106. woodpecker rufus bellied
- 107. woodpecker scaly bellied
- 108. woodpecker yellow crowned
- 109. yuhina whiskered

इनमें से करीब 90 तो धनंजय और सागर ने ही खोज निकाले। बहुत से नेगी जी की सहायता और जानकारी के बिना संभव नहीं थे।

वापस जाने की तैयारी हो गई। मेरे निंबू के पेड़ को धर्मा ने एक डिब्बे में लगा दिया उससे उठाना आसान हो गया।



सुबह हमेशा की तरह जल्दी निकले। डर था कि कहीं ट्रैफिक की वजह से एयरपोर्ट पहुँचने में देर ना हो जाए। बट्टी-केदार के कपाट खुलने की वजह से रास्तों पर आए थे तब जितनी थी उससे दुगनी भीड़ थी

मणि ने हमें गाड़ी से देहरादून छोड़ा। रास्ते में देवप्रयाग में रुक कर भागीरथी और मंदाकिनी के संगम का फोटो खींचा। मंदाकिनी का पानी एकदम स्वच्छ और नीला है जबकि भागीरथी का एकदम मटमैला। देख कर बड़ा अजीब लगता है।



शाम तक हम वापस पुणे पहुँच गये। हमारे लौटने के पंद्रह बीस दिनों के बाद ही उत्तराखंड में प्रकृति का तांडव शुरू हो गया। तिवारी जी और धर्मा से वहाँ की जानकारी मिलती रहती है, जो काफी भयानक हैं। कहते हैं ये सारी विपदा मनुष्य निर्मित है। जिस बेदर्री से इंसान ने जंगल काटे, नदियों के रुख मोड़े उसी का परिणाम है।

फिर दिनकर याद आए

मेरे नगपति मेरे विशाल मैं उन्होंने कहा है

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार।

ले अंगड़ाई हिल उठे धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलीराट हूँकार भरे
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद

लगता है सचमुच धरा हिल उठी है। लेकिन फिर भी उन सब की चिंता है।

आशा है कि वे दोनों प्यारी सी अम्माएं कुशल होंगी। सुना है बनतोली गाँव में भी बहुत नुकसान हुआ है ।



लेकिन उत्तराखंड के लोग बड़े जिगर वाले हैं और उन्हें अपनी देवभूमि बेहद प्यार है। उम्मीद है जल्दी ही संभल जाएंगे।

निंबू का पेड़ मेरे घर में खुशी खुशी बढ़ रहा है।

